

भविजन प्रीति सहित चित धारे, रवि-शशि-सम तम केसरिहारे।
 उर घट प्रकटे पूरन आन, जान श्रुत पंचमि पर्व महान ॥४॥
 मोक्षदायिका है जिनमाता, तुम पूजक सम्यक् निधि पाता।
 'नंद' भी अपने आश्रित जान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥५॥

गुरु भक्ति

(१)

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥टेक॥
 आप तरैं अरु पर को तरैं, निष्पृही निर्मल हैं ॥१॥
 तिल तुष मात्र संग नहिं जिनके, ज्ञान-ध्यान गुण बल हैं ॥२॥
 शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मन्दर तुल्य अचल हैं ॥३॥
 'भागचन्द' तिनको नित चाहें, ज्यों कमलनि को अलि हैं ॥४॥

(२)

धन-धन जैनी साधु जगत के, तत्त्वज्ञान विलासी हो ॥टेक॥
 दर्शन बोधमई निज मूर्ति जिनको अपनी भासी हो।
 त्यागी अन्य समस्त वस्तु में अहंबुद्धि दुःखदासी हो ॥१॥
 जिन अशुभोपयोग की परिणति सत्तासहित विनाशी हो।
 होय कदाच शुभोपयोग तो तहँ भी रहत उदासी हो ॥२॥
 छेदत जे अनादि दुःखदायक दुविधि बंध की फाँसी हो।
 मोह क्षोभ रहित जिन परिणति विमल मयंक विलासी हो ॥३॥
 विषय चाह दव दाह बुझावन साम्य सुधारस रासी हो।
 'भागचन्द' पद ज्ञानानन्दी साधक सदा हुलासी हो ॥४॥

(३)

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी।
 हरषि-हरषि बहु गरजि-गरजि के मिथ्या तपन हरी ॥टेक॥
 सरधा भूमि सुहावनि लागी संशय बेल हरी।
 भविजन मन सरवर भरि उमड़े समुझि पवन सियरी ॥१॥